भट परो नींद मोह की, जो टाली न टले क्यों।
आंखां खोल सीधा कहे, फेर वली त्यों की त्यों।। १ ।।

इस मोह की नींद को आग लग जाए, यह किसी तरह से नहीं हटती। होश में आकर कुछ संभलती भी है तो फिर माया में जैसी की तैसी ही बेहोश हो जाती है।

एक तकला भाने ताओ में, फोकट फेरा खाए।
झगड़ा लगावे आप में, हिरदे रस न जुबांए।। २ ।।

एक क्रोध में आकर तकला तोड़ देती है और व्यर्थ में घूमती फिरती है। आपस में (पार्टी बनाती है) लड़वाती है। उनके हृदय में या जबान में प्रेम नहीं होता।

एक तकले समारे और के, लर लर कतावे।
कहे अपनायत जान के, समया बतावे।। ३ ।।

एक ऐसी मददगार होती है कि अपना कातने के साथ-साथ दूसरे के तकलों को भी संवारती है और लड़-लड़कर उनसे सूत कतवाती है। वह ऐसा अपनापन (अपना साथ) जानकर करती है और समय का महत्व बताती है।

एक झगड़ा लगावे और को, सामी तकले डाले वल।
ए बातें होसी वतन में, जब उतर जासी अमल।। ४ ।।

एक ऐसी है जो आपस में लड़वा कर उनके तकले टेढ़े कर देती है। जब माया का नशा उतर जाएगा तो यह सब बातें घर में होंगी।

एक औरों को उलटावहीं, कहा बिध होसी तिन।
कातना उन पीछा पड़या, सामी धके दिए औरन।। ५ ।।

एक ऐसी है जो दूसरों को उलटा रास्ता बताती है। उसका क्या हाल होगा? स्वयं भी कातने में पीछे रह गई तथा सामने से औरों को भी धक्के मारे।

जो झगड़ा लगावें आपमें, ताए होसी बड़ो पछताप।
ओ जानें कोई ना देखहीं, पर धनी बैठे देखें आप।। ६ ।।

एक ऐसी है जो आपस में झगड़ती है। उसे पछताना पड़ेगा। वह समझ बैठी है कि और कोई नहीं देखता, पर धनी सबके अन्दर बैठे देख रहे हैं। इसकी उसको खबर नहीं है।

बात उठावें जो मन से, सो होसी सबे वतन।
एक जरा छिपी ना रहे, यों कोई भूलो जिन।। ७ ।।

जो झूठी बातें उठा-उठाकर आरोप लगाती हैं, उन सबकी बातें घर में होंगी। वहां कोई भी बात छिपी नहीं रहेगी, इसलिए भूल न करो।

एक काते मांहें चुपकतियां, सो ताने सहे औरन।
तांत चढ़ावे तलबें, नजर ना चूके खिन।। ८ ।।

एक चुपचाप कात रही है। दूसरों के ताने सहती है। सूत बड़ी चाहना से कात रही है। वह अपनी नजर तकले और तांत से एक क्षण के लिए भी नहीं हटाती।

Nijanand App

ताए होसी मान धनीय को, साथ मिने रंग लाल।
उठसी हंसती हरख में, पांउ दे पड़ताल।। ९ ।।

ऐसी सखी को धनी का प्यार तथा सुन्दरसाथ में मान मिलेगा। वह बड़ी खुशी से धरती पर पाँव की पड़ताल देकर उठेगी।

हाथ घससी हाथसो, जो लई इंद्रियों घेर।
सो पछतासी आंखां खुले, पर ए समया न आवे फेर।। १० ।।

जो इन्द्रियों के सुख में लिप्त रही, वह हाथ मलती उठेगी। वह आंखें खुलने पर पछताएगी। यह समय दुबारा नहीं मिलेगा।

जो इत आंखां खोलसी, ले इस्क या विचार।
सो करसी बातें बिध बिध की, सब सैयों में सिरदार।। ११ ।।

जो यहां पर धनी की वाणी या इश्क लेकर जागृत होंगी, वह साथ में सिरदार (प्रमुख) होकर तरह-तरह की बातें करेंगी।

जिन इत आंखां ना खोलियां, करके बल बेसुमार।
नींद उड़ाए ना सकी, सो ले उठसी खुमार।। १२ ।।

जिन्होंने अपना बल कर अपनी आंखें नहीं खोलीं, वह माया को दूर नहीं कर सकीं और वह खुमारी में ही उठेंगी।

जिन इत उड़ाई नींदड़ी, सो उठत अंग रोसन।
केहेसी कातनहार को, विध विध के वचन।। १३ ।।

और जिन्होंने नींद को भगा दिया है, उनके अंग खुशी से भरे होंगे और कातने वाली सखियों के बीच तरह-तरह की बातें करेंगी।

जो उठसी आंखां चोलती, सो केहेसी कहा वचन।
ना तो आई थी उमेद देखने, पर नींद ना गई तिन।। १४ ।।

जो घर में आंखें मलती-मलती उठेंगी वह दूसरों को क्या कहेंगी? यहां आई तो बड़ी चाहना लेकर थीं पर वह नींद को वश में न कर सकीं।

सुनो सैयां कहे इंद्रावती, तुम आईयां उमेद कर।
अब समझो क्यों न पुकारते, क्यों रहियां नींद पकर।। १५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी साथ को कहती हैं कि तुम परमधाम से चाहना करके आई थीं और यहां पर जगाने पर भी क्यों नहीं जागतीं। माया पकड़कर क्यों बैठी हो।

तुम वतन में धनीयसों, क्यों करसी बात अंधेर।
रेहेसी उमेदां मन में, ए न आवे समया और बेर।। १६ ।।

घर में जागने पर इस माया की बातें धनी से कैसे करोगी? तुम्हारे मन में चाहना बाकी रह जाएगी और फिर दुबारा यह समय नहीं मिलेगा।

कातने को उतावलियां, आईयां मिलकर तुम।
अब झूलो रहियां नींद में, कातना भूल खसम।। १७ ।।

हे सखियो! तुम बड़ी तेजी से कातने के लिए आई थीं, किन्तु धनी की याद को (कातना) भूलकर नींद में झूल रही हो।

Nijanand App

धनी आए जगावहीं, कहे कहे अनेक सनंध।
नींदें सब भुलाइयां, सेवा या सनमंध।। १८ ।।

धनी आकर हर तरह से वाणी सुनाकर तुम्हें जगा रहे हैं। इस माया ने सेवा और मूल सम्बन्ध सब भुला दिया।

ए जिमी लगसी आग ज्यों, जब धनी चले घर।
वचन पिउ के लेयके, इत क्यों न जागो मांहें अवसर।। १९ ।।

धनी के घर जाने के बाद यह जमीन आग जैसी लगेगी। इसलिए, हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर अवसर आपके हाथ में है। धनी की वाणी सुनकर जागते क्यों नहीं हो?

भट परो इन नींद को, ए ठौर बुरी विखम।
यों जगावते न जागियां, तो कौन विध होसी तिन।। २० ।।

आग लग जाए ऐसी माया के संसार को, जहां जहर भरी जमीन है। जो यहां जगाने पर भी नहीं जागेगी तो उनका घर चलकर क्या हाल होगा?

तुम देखो भांत धनीय की, कई विध करी चेतन।
सबों सुनाए कहे इंद्रावती, जागो चलो वतन।। २१ ।।

हे साथजी! तुम धनी की मेहर को देखो। धनी ने कई तरह से तुम्हें चेतन किया है। यह वचन सबको सुनाकर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, साथजी! जागो और घर चलो।

साहेब मांहें बैठ के, बतावत हैं ठौर।
सो घर तुमको देखाइया, जहां नहीं कोई और।। २२ ।।

धनी अपने बीच बैठकर घर का ठिकाना बताते हैं। वह घर तुम्हें दिखाया है जहां अपने सिवाय कोई और नहीं है।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ६३७ ।।

अब तूं जिन भूल आतम मेरी, पेहेचान के खसम।
वतन देखाया अपना, जिन छोड़े पिउ कदम।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! धनी की पहचान करने के बाद अब मत भूलना। धनी ने अपने घर की पहचान करा दी है। अब उनके चरण कमलों को नहीं छोड़ना।

वचन कहे बड़े मुखथें, पर तूं तो समया न भूल।
तूं कात बारीक धनीय का, ए तातें पावेगी मूल।। २ ।।

तुमने अपने मुख से बड़ी-बड़ी बातें की थीं। तू तो अब न भूल और अपने धनी का बारीक सूत कात। इसकी कीमत तुझे मिलेगी।

अजूं तें पाओ न कातिया, इत चाहिएगा सेर भर।
जब उठेगी आतन से, तब बहुरि चाहेगी अवसर।। ३ ।।

अभी तूने पाव भर भी नहीं काता और वहां तो सेर (किलो) भर चाहिए। जब तू आतन (भवसागर) से उठेगी, फिर इस समय को ललचाएगी कि और क्यों नहीं काता?

ए जो गमाए दिनड़े, गफलत में जो गल।
अब तोको उठन के, आए सो दिनड़े चल।। ४ ।।

इतने दिन तूने माया में लिप्त होकर गंवा दिए। अब तेरे घर चलने के दिन आ गए हैं।

Nijanand App